

★ राग गोरी ★ मेरे री ! मन मोहन भाई । संझा समै धेनु के पाछें आवत हैं सुखदाई ॥ सखा-मंडली मध्य मनोहर मुरली मधुर बजाई । सुनत स्रवन तन की सुधि भूलि, नैन की सैन जताई ॥ कियौ प्रवेस नंद-गृह-भीतर जननी निरखि हरषाई । 'छीत-स्वामी' गिरिधर के ऊपर सरवसु देत लुटाई ॥

★ राग गोरी ★ मोहन नटवर बपु-काछे आवत गो-धन संग लिए लटकत । देखन कों जुरि आई सवै त्रिय मुरली-नादस्वाद-रस गटकत ॥ करत प्रवेस रजनी-मुख व्रज में देखत रूप हृदै में अटकत । 'छीतस्वामी' गिरिधरनलाल- छवि देखत ही मन कहुं अनत न भटकत ॥

★ राग कान्हरो ★ आरती करति जसुमति मुदित लाल कों । दीप अद्भुत जोति, प्रगट जगमग होति, वारि वारति फेरि अपने गोपाल कों ॥ बजत घंटा ताल, झालरी संख-धुनि, निरखि व्रज-सुंदरी गिरिधरन लाल कों । भई मन में फूलि, गई सुधि-बुधि भूलि, 'छीत-स्वामी' देखि जुवति-जन-जाल कों ॥

★ राग गोरी ★ ए आज कौन बन चराई येती गैयां कहां धों लगाई एती बेर ॥ बैठे व कहा सुध लेहो नेन ओसेर ॥१॥ एक बन ढूढ सकल बन ढूढी तोउ न पाई गायनकी नेर ॥ तानसेनके प्रभु तुम बहोनायक देहो कदमचढ टेर ॥२॥

शयन दर्शन के पद (शीतकाल)

★ राग नाईकी ★ जान्यो प्रीतको मरम ॥ मुख कीमोसोजियकी औरनसों पायो है तिहारो भरम ॥१॥ ऐसीहै जो कोन बाल जिन रस वस कर लीने जानियत हियके नरम ॥ हरिनारायण स्यामदास के प्रभु माई भलीकीनी भोर आये चतुर परम ॥२॥

★ राग नाईकी ★ लोचन लालची भये ॥ रोके न रहत प्रेमके माते पलक कपाट दये ॥१॥ ले मनदूत पवनद्वै निकसे बहुरयो स्यामपें गये ॥ सूरके प्रभु खरेई सोदागार बिनुग्रथ मोल लये ॥२॥

★ राग नाइकी ★ प्यारे पैया परन नदीनी ॥ जोईजोई व्यथा हुती मेरे मनमें छिन एक में दूरकीनी ॥१॥ जो सोतिन मोसो अनख कर तही सोई आनंद

भीनी ॥ नंददासप्रभु चतुरशिरोमणि प्रीत छाप कर लीनी ॥२॥

★ राग नाइकी ★ मिलेकी फूल नयनाही कहे देत तेरे ॥ स्यामसुंदर मुखचुंबनपरसे नाचत मुदित अनेरे ॥१॥ नंदनंदनपें गयो चाहत है मारग श्रवणनघेरे ॥ कुमनदास गिरिधरन मिलनकू करत चिन्ह दशफेरे ॥२॥

★ राग नाइकी ★ चले अनत धोखे आये मेरेंसो तो सकुच रहेही बनेगी ॥ तिहारे मिलेकी फूलपीर आवे वांकी मोहि अवधि आस तारे भोरलो गनेगी ॥१॥ तुम बहुनायक सबसुखदायक दोऊधाकों सोचकिये प्रीततो तनेगी ॥ जाहीको सुहाग भाग ताहीको लहनो जगन्नाथप्रभु प्यारे रसमेंसनेगी ॥२॥

★ राग नाइकी ★ प्यारे अवधिवदी घर आवन की ॥ जिहिजिहि जानी तिहि रति मानी टेव परीरी मोहि खिजावनकी ॥१॥ बहुत गई अब थोरीसी रही यारे विरहनी विरह जगावनकी ॥ सूरदासप्रभुसो जाय कहियो आपही रीझे और रिझावन की ॥२॥

★ राग नाइकी ★ प्यारे अवधि टरी ॥ जिहिं डर डरपत सोई भईहें नाजानो दृष्टि कोन करी ॥१॥ एक निमिष मोपें रह्यो नपरेरी आलीरी उडक्यो नजात गगन चढिरे ॥ सूरदासप्रभु वे बहुनायक विरहअग्निमें जात जरी ॥२॥

★ राग नाइकी ★ मेरो पिय रसियारी सुनरी सखी तेरो दोष नहीं ॥ नवल लालको सब कोउचाहत कोन कोन के मन बसियारी ॥१॥ एकनसों नयना जोरे एकनसो भ्रोंह मरोरें एकनसों मुख हसियारी ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभुमाई संग डोलत पूरण शशियारी ॥२॥

★ राग नाइकी ★ यह मन लाग्योरी मेरो सुंदरस्याम अहीर सों ॥ निश बासर मोहि कल नपरतहें कैसे राखो मन धीरसों ॥१॥ घाटवाट मोहि रोकत टोकत ग्वालबाल संग भीरसों ॥ कृष्णजीवन लछीराम के प्रभु मोहि यों सुध जाय शरीरसों ॥२॥

★ राग नाइकी ★ बारों मीन खंजन आलीके दृगन पर भ्रमर मन ॥ अतिहसि लोने लोने अतिही सुढार ढारे अति कजरारे भारे वित्तही अंजन ॥१॥ श्वेत

असित कटाक्षन तारे उपमाको मृगही कुंजन ॥ परमानंदप्रभु रसवश करलीने
प्यारीजूके मनके रंजन ॥२॥

★ राग नाइकी ★ सखीहो अलकन वीच चंपकली गनगनी ॥ जगमगात हीरा
लाल कुल्हे पर पाग चोकरी अति बनी ॥१॥ सुभग नयन तरुण मदमाते
मुसकाते आनअन ॥ गोविंदप्रभु ब्रजराजकुंवर धन्य धन्यहो धन्य धन्य ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ रंगमहलमें रंगीलो लाल बैठे रंग भरे ॥ हस गिर जात प्रीतमकी
अंक मध्य बलहासरसमत परस्पर मन हरे ॥१॥ कुच अंतर गाढे आलिंगन देत
ललन प्रिय भुजवशपरे ॥ गोविंदप्रभु प्यारी संग गावत तान बितानतरे ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ प्यारी कमलवदन तेरो याहीते धरे हीं रहत हैं कमल कर ॥
वरहीचंद देख कछु अनुसारयाहीते धरेयही रहतहैं माथें पर ॥१॥ दशनजोत
अनुसार याहीतें धरत कंठ मोतिन लर ॥ कंचन वरण तेरो याहीतें प्यारी याहीते
धरे रहत पीतांबर ॥२॥ तुव स्वर कंठ मिलत कछुयाहीते धरत बंसी अधर ॥

गोविंदबल इम कहत प्यारी सो इनवातन नेक नरह्यो जात वीतत वासर ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ आज बने सखी नंदकुमार ॥ वामभाग वृषभान नंदिनी
ललितादिक गावे सिंघद्वार ॥१॥ कंचनथार लियेजु कमलकर मुक्ताफल फूलनके
हार ॥ रोरीको सिर तिलक विराजत करत आरती हरख अपार ॥२॥ यह
जोरी अबिचल श्रीवृंदावन देत असीस सकल ब्रजनार ॥ कुंजमहलमें राजत दोऊ
परमानंददास बलहार ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ आवरी बावरी ऊजरी पागमें मेलकें बांध्यो मंजुलचोटा ॥
चंचललोचन चारु मनोहर अबही गहि आन्योहै खंजन जोटा ॥१॥ देखत
रूपठगोरीसी लागत नयनन सेन निमेषकी ओटा ॥ नंददास रतिराज कोटिवारों
आज बन्यों ब्रजराजको ढोटा ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ अधर मधुर मुखरित मोहनवंस ॥ चलत दृगंचल चपल करत
अतिबिलुलित पारिजात अवतंस ॥१॥ मानों गजराज कलभ अतिमद गलित
आवत लटकत भुजधरें प्रिया सखा अंस ॥ गोविंदप्रभुको जु श्रीदामा प्रभृति सब

जयजय करत प्रसंस ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ नयन छबीले तरुण मदमाते ॥ चंचल चपल भृकुटी छवि उपजत आनआन मुसकाते ॥१॥ भक्त कृपारस सदाई प्रफुल्लित मानहु कमलदल राते ॥ गोविंदप्रभुको श्रीमुख निखरत पानकरत न अघाते ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ सुंदर सब अंगअंग रूपरास राई ॥ ग्रथित कुसुम अलकावली धुनत मधुप अवतंसन लटकत सिर लालपाग शोभा कछु कही नजाई ॥१॥ सुभग कसुंभी वरुनी बिथुरत पीतबंद विविध मोजे प्रतिबिंबित स्याम सुभग झाई ॥ गोविंदबल वानिकपर त्रिभुवन मन मोह्यो कोटि कामवारोरी चरण जुन्हाई ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ आज माई वनेरी लालन गोवरधनधर ॥ रतन जटित छाजे पर बैटे वृंदारण्य पुरंदर ॥१॥ ग्रथित कुसुम अलकावलि अतिछवि ध्वनित मधुप अवतंसन पर ॥ लटकलटक जात श्रीदामा अंकमध्य हस मिलवत करसो कर ॥२॥ मणिकौस्तुभ हृदयपदक विराजत कंठबनी गजमोतिनकी लर ॥

गोविंदप्रभुजो सकल ब्रजमोह्यो अंग अंग ललन सुंदरवर ॥३॥

★ राग कान्हरो ★ आवत माई राधिका प्यारी युवती यूथ में बनी ॥ निकस सकल ब्रजराज भवनतें सिंघद्वार ठाढे ललन कुंवर श्रीगिरिवरधारी ॥१॥ निरख वदन भ्रोंह मोरी तोरतृण ओर चाल चितवन ओर तिहिछिनु अंचल संभारत घुंघटकी ओटकै लीयोहें लाल मनुहारी । गोविंदप्रभु दंपतिरस मूरति दृष्टिसो भरत अंकवारी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ सिर सोने के सूतन सोहत पागपेंचन ऊपर नग लगे ॥ रतनारे भारे ढरारे नयनन देखत मूर्छित मेंनजगे ॥१॥ मुखकी मंजुलताई बरनी नजाई चंचलता देखि दूर भगे ॥ नंददास प्रभु नंदरानी छबी निरखत वार पीवतपानी जिन काहुकी दृष्टि लगे ॥२॥

★ राग केदार ★ नयननमेंवस रहीरी लालकें नागरि नैंक न निसरत ॥ तेरे तनकी नवरंग बानिक रसिक कुंवरके चिततें न विसरत ॥१॥ तेरो मन अरु गिरिधर प्रियको बहु विधान एको करि मिसरत ॥ कृष्णदास गिरिधर रसिकवर

सुवशकरणकों सीखीहैं कसरत ॥२॥

★ राग केदार ★ चिबुक कूप मध्य पिय मनपर्यो अधरसुधारस आस ॥ कुटिल अलक लटकत ऊपर काढनकों कंडक डार्यो बांधप्रेमके पास ॥१॥ चंचल लोचन ऊपर ठढ़ेहैं अँचनको मानो मधुरहास ॥ नंददासप्रभु प्यारी छवि देखें बढीहैं अधिक पियास ॥२॥

★ राग केदार ★ नां जानो किन कान भरेरी सखी प्रीतम अनत ढरेरी ॥ रसके समय कहें जोमोसो तेहूं बोल विसरेरी ॥१॥ केसैं कर सचुपावें प्राण ए विरही अनल जरेरी ॥ रसिक प्रीतम अबमिलवों केसैं ओरनके पालेजु परेंरी ॥२॥

★ राग अडानो ★ जर जाओरी लाज में ऐसी कोन काज आवें कमलनयन नीके देखन न दीनें । वनतें आवत मारग में भेटभई सकुच रही इन लोगनके लीनें ॥१॥ कोटि यतन कर रहीरी निहारवेकू अंचराकी ओट देदे कोटि श्रमकीने ॥ नंददासप्रभु प्यारी तादिनतें मेरे नयना उनहीके अंगसंग रंगरस भीनें ॥२॥

★ राग अडानो ★ तेरी भ्रोंहकी मरोरनतें ललितत्रिभंगीभये अंजनदे चितयो भयेजू स्यामवाम ॥ तेरी मुसकान देख दामिनीसी कोंधजात दीनके याचत प्यारी लेत राधे आधोनाम ॥१॥ ज्यों ज्यों नचायो चाहो तैसेहरि नाचत बल अवतो मयाकीजे चलिये निकुंजधाम ॥ नंददासप्रभु बोलोतो बुलायलाऊ उनकोतो कलपवीतें तेरीघरीयाम ॥२॥

★ राग अडानो ★ जहां तहां ढर परत ढारे मोहन तेरे नयन ॥ जे निखरत तिनके मन वशकर सोपतहे ले मेंन ॥१॥ छिनसन्मुख छिनही होत टेढे एके अवस्था कबहुं नएँन ॥ रसिक प्रीतम ताकें विनदेखें छिन नहीं मनमें चेन ॥२॥

★ राग अडानो ★ पिय तोहि नयननहीमें राखूं ॥ तेरी एक रोंमकी छबीपर जगत वार सबनाखूं ॥१॥ भेटों सकल अंग सांबलकूं अधरसुधारस चाखूं ॥ रसिक प्रीतम संगम की बातें काहुसो नहि भाखूं ॥२॥

★ राग अडानो ★ पिय तेरी चितवनहीं मे टोना ॥ तनमनधन विसर्यो जबहीते देख्यो स्यामसलोना ॥१॥ ढिंगरहवेकू होत विकलमन भावत नाहि नभोना ॥

लोग चवाव करत घरघर प्रतिधर रहिये जियमोना ॥२॥ छूटगई लोकलाज
सुतपतिकी ओर कहा अब होना ॥ रसिक प्रीतमकी बांनिक निरखत भूलगई
गृहगोना ॥३॥

★ राग अडानो ★ स्याम सलोने गातहें काहूको ढोटा ॥ आईहूं देख खिरक
मुख ठाढो नकछु कहेनकी बात ॥१॥ कमल फिरावत नयन नचावत मोतन
मुरमुसकात ॥ छबिकेबल जगजीत गर्वभर्योमेन मानों इतरात ॥२॥ नखसिख
रूपअनूपरूप छबि कविपे वरन्यो न जात ॥ नंददास चातक की चोंचपुट सबघन
कैसे समात ॥३॥

★ राग अडानो ★ कहारी कहों मोहन मुखशोभा कहा करूं सिरपरीहै ठगोरी
रूपदेख मेरो मन भयो लोभा ॥१॥ अंग अंग लावण्यरूप छबि मानोंहो मदनद्रुम
उपजी गोभा ॥ कृष्णदास गिरिधरन किये वश चपल कटाक्ष गढ़यो मन
चोभा ॥२॥

★ राग अडानो ★ तेरे लोचन लालच करत ॥ पियके नयनन सन्मुख चितवत
भूले नैंक न टरत ॥१॥ कवहुक सुमुखि तिरछे दैके नवरंगकों मनहरत ॥
कृष्णदास प्रभु गिरिधरनागर सेनन दै दै लरत ॥२॥

★ राग अडानो ★ तेरे लोचन लालच रासी ॥ पियके नयन मधुप वशकीने भ्रोंह
मेनकी पांसी ॥१॥ अब सखी तन देतन चितवन मिले करत उपहास ॥
कृष्णदासप्रभु गिरिधरमोहन रिझवत रूपविलास ॥२॥

★ राग अडानो ★ तेरे लोचन लालच मोट ॥ प्राणनाथकों मन चितेंचोरत दे
घूंघटकी ओट ॥१॥ गिरिधर पियके नयन सन्मुख मिले करत रसघोट ॥
सुन कृष्णदास निरख बल इनकों न्याय लजत मनटोट ॥२॥

★ राग अडानो ★ घूंघटके वगरोट ओटरहि चोटशरासन भ्रोंह सायक दृग ॥
वेध्योविदित चपल पलकन अलकनफणि नृशंसवलि ढिग ॥१॥ तेकरसायल
नायक कानन सुन सुंदरी सुंदर सरको जग ॥ बचन प्रसंस अंसभुज हरिधर करि
करुणा ज्यूं आभूषणको नग ॥२॥ चितचितयो फिर दसा अनोखी अधरमधुर

सुधि भई जोहूं लग ॥ सूरदास संयोग येहि गति रतिविछुरेकी अकथ कथा
खग ॥३॥

★ राग अडानो ★ माईरी सांवरो जबते दृष्टि पर्यो ॥ वेष किशोर स्यामघनसुंदर
अंग अंग प्रेम भर्यो ॥१॥ टेढी पाग लटकी रही वामभाग तापर पेच जराय
जस्यो ॥ साजे वागे रस अनुरागे मनमथ मानहस्यो ॥२॥ मोतन हेर हसे
मनमोहन तवते सुधिबुद्धि सब विसस्यो ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधरन छबीलो नयननमांझ
अस्यो ॥३॥

★ राग अडानो ★ तव मुख चंद सहज सीतल जामें याबिधुतें ओर भांति ॥
जाकों निशाराहु डर नाहि कलंक धर ओर नकछु दोष जाकी नित्यप्रति बढतीहें
कांति ॥१॥ अलकनके मिष जाडिंग निसदिन रहतहें मधुपन की पांति ॥
रसिक प्रीतमकों ताहीतें तो यह सज औरन सुहात ॥२॥

★ राग अडानो ★ तेरेरी नव जोवन के अंगरंगसे लागत परम सुहाए ॥ जगमग
जगमगहोत मनोमृदु कनक डंड पर ललित नग लगाए ॥१॥ तामें तू कुंवरि
करउरजनकी प्रीति निरख यातें मोमन भाए ॥ नंददासप्रभु प्यारीके अंतरठोर दे
बोहिरनिकस आये ॥२॥

★ राग अडानो ★ सब व्रत भंग भए सखि तबतें एक हि व्रत निश्चें कर लीयो ॥
खेलत खिरिक रसिक नंदनंदन आय अचानक दर्शन दियो ॥१॥ लोकलाज कान
कुलसीमा मानों सब संकल्पही कीयो ॥ मदनगोपाल मनोहर-मूरति नवरस सिंच
सिरांनो हियो ॥२॥ व्यसन पर्यो संतत चितचाहत रूपसुधा लोचनभर पीयो ॥
चतुर्भुजप्रभु गिरिधनलाल छबि विनु देखें पल परत न जीयो ॥३॥

★ राग अडानो ★ भावे तोहे हरिकी आनंद केलि ॥ मदनगोपाल निकटकरपाए
ज्यों भावें त्यों खेलि ॥१॥ कमलनयनकी भुजामनोहर अपुने कंठले मेलि ॥
प्रेमविवश ओर सावधानकै छूटी अलक संकेलि ॥२॥ तरुण तमाल नंदके नंदन
प्रिया कनककी बेली ॥ यह लपटानी दासपरमानंद मुक्ति पायनसी ठेली ॥३॥

★ राग अडानो ★ न्यायरी तू अलक लडी ॥ निसीवासर गिरिधरन लालके

हृदयमें रहेत गडी ॥१॥ तोहीलों सुख जोलों समीपरहे एकनिमिष भावत नही छडी ॥ कुमनदास स्वामिनी राधाहे ब्रजयुवतिन माझ बडी ॥२॥

★ राग अडानो ★ देख जिऊं माई नयन रंगीलो । ले चल सखीरी तेरे पायलागों गोवरधनधर छेलछबीलो ॥१॥ नवरंग नवल नवलगुण नागर नवलरूप नवभांत न बीलो ॥ रसमें रसिक रसिकनी भ्रोंहन रसमय वचनरसाल रसीलो ॥२॥ सुंदर सुभग सुभगता सीमा सुभगसुदेश सुभाग्य सुशीलो ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक मुकुटमणि सुभगचरित्र रिपुदलन हठीलो ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ मिले पिय सांकरी गली ॥ मदनमोहन पिय हसकर डारी मोतन चंपकली ॥१॥ वारिज वदन देख विथकित भई घुंघटमें न समात अली ॥ गोविंदप्रभुप्यारी जु परस्पर रहे रसमत्तरली ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ विधाता विदहूं नजानी ॥ सुंदर वदन पानकरवेकूं रोमरोम प्रति नयनन दीने करी यह बात अयानी ॥१॥ श्रवणसकल वपु होतरी मेरे सुनत पिय मुख अमृत मधुरबानी ॥ अरी मेरे भुजाहोती कोटिकोटि तोहों भेटती गोविंदप्रभुसो तो उन्नतपत बुझानी ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ मोहन मुखारविंदपर मनमथ कोटिक वारोंरी माई ॥ जहीं जहीं अंगना दृष्ट परतहें तहीं तहीं रहत लुभाई ॥१॥ अलक तिलक कुंडल कपोल छबि एक रसना मोपें वरणि न जाई ॥ गोविंद प्रभुकी सुंदर बानिक पर बलबल रसिक चूडामणि राई ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ बलबल बलकुंवरि राधिका नंदसुवन जासों रतिमानी ॥ तूं अतिचतुर वे चतुरशिरोमणि प्रीतिकरी केंसें रहतहें छानी ॥१॥ वे जोधरत तन कनक पीत पटसो तोसब तेरी गति ठानी ॥ तें पुन श्याम सहज वे शोभा अंबरमिष अपने उर आनी ॥२॥ पुलकरोम अबहींहैं आयो निरखरूप निजदेह सयानी ॥ सूर सुजान सखीके बूझें प्रेमप्रकाश भयो वे हसानी ॥३॥

★ राग कल्याण ★ सखी आज कहा कहो तव रूपकी निकाई ॥ नखसिखसो अंग अंग लालगिरिधरन हित रचिपचि बिरंचि अद्भुतबनाई ॥१॥ चाल

अतिमराल जंघ कदलीखंभ कटिसिंघ गौरतन सुभग सींवा ॥ उरज श्रीफलपक्व
अलककेकी छटा बचन पिक मोहन कपोत ग्रीवा ॥२॥ तरल युगलोचन नील
नलिन श्रीमोचन चिबुक स्यामलबिंदु चारु लसे ॥ श्रवण ताटक हाटक रत्नखचितसो
मधुछबि शोभित कपोलवसे ॥३॥ अधरबंधूक द्युतिकुंद दशनावली ललितवर
नासिका तिल प्रसूनबने ॥ निरख मुखचंद्रमा रवि संभ्रम चितचलत ततक्षण
छबिकोकनदबने ॥४॥ सकल श्रीसिंधु यह कहा भग वरणिये कोटिमुख जीभ
परमित न पावे ॥ दासकुमनस्वामिनीको सुयश अंतरंग सहचरी मुदित
गावे ॥५॥

★ राग कल्याण ★ लालकी रूपमाधुरी नयननिरख नेक सखीहो मनसिज मनहरन
हससांवरो सुकुमार नखशिख अंग उमग सौभाग्य सीमानकीहो ॥१॥ लटपटी
सुरंग पाग ढरकरही वामभाग चंपकली कुटिल अलक बीच बीच रखी ॥ आइयत
वृगअरुण दंपति लोलकुंडल मंडित कपोल अधर अरुण दंपतिकी छबि क्योंहूं नजात
लखी ॥२॥ अद्भुत भुजदंड मूलपीन अंस सानुकूल कनक कपिश दुकूलन
शिख दामिनी दरषी ॥ उरपर मंदारहार मुक्ता लखरसुढार मत्तद्विरद गति त्रियनकी
देह दशा करषी ॥३॥ मुकुलितवय नव किशोर वचन रचन चितके चोर मधुरित
पियसाय नूतमंजरी चरखी ॥ नटबर हरिवंश गान न रागिनी कल्याण तान सदन
देख स्वरन कल इतेपर मुरलीका वरखी ॥४॥

★ राग ईमन ★ लाल फव्वो उदो फेंटा गोरे भाल पर बेंदी लाल सोनेके सूतबने
कलंगीके झुकेहैं दाहिने अलक स्यामपर करत हाल ॥१॥ सुमन बनी नथ फेर
फेरत पानखात मुसकात बाल ॥ दर्शन लखरिझवार रसिकपिय चले गोरस भरे
वल्लभ रसिक रसाल ॥२॥

★ राग नायकी ★ काजर बिन कारी तेरी अंखियां फुलेल बिन चिकुर चिकने
अधर राते बिन पान ॥ मंजन बिन जोत दसन आछे आभूषण बिन केसी नीकी
लागे तू सुजान ॥१॥ बिन सुगन्ध तो तन सुगन्धमय कोककला पढे बिन रति
की खान ॥ प्रभु कल्याण गिरिधरन लाल के तूही जीवन प्राण ॥२॥

★ राग कल्याण ★ सहज उरज पर छूट रही लट ॥ कनक लतातें उतर भुजंगनि
अमृतपान मानो करति कनकघट ॥१॥ चितवति चारु तोहे देखें त्रिक मोहे
चिबुक बिन्दु बर अधर निकट ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन रंगी रंग अतिबिचित्र
गृहकुंज जमुनतट ॥२॥

★ राग कल्याण ★ प्यारी तेरो मुखचंदा सम करवेको चंदा बहुत तपयो ॥
उडगनको ईस भयो पुनरोसधीस भयो ईससील लों गयो ॥१॥ सुधामय सरीर
कियो बांटबांट सुरन दयो मरमरके फेर जियो तन धरकें नयो ॥ नंददासप्रभु प्यारी
तदपि कछु न अर्थ सयों जाय समुद्र पर्यो बिधि बूडन न दयो ॥२॥

★ राग अडानो ★ सेन दे बुलावो लाल बैठी हैं झरोखे बाल बनठन के छिपरी ॥
इत सिंघद्वार ठाडो ललन रसिकवर हाथन नौलासी लिये किये बिचित्र भेख अंग
अंग रहे दीप री ॥१॥ रूप रिझवार ब्रजराज को कुंवर आली दृग अंकवार भर
लिये पलकन झपरी ॥ दोऊ ओर प्रेम की झकोरन में नंददास प्रीत की ललित
गत चित चितरेने लिख लई कठिन लिपरी ॥२॥

★ राग अडानो ★ चटकावरी पावरी पगन नगन जरी पहरि निकसे नंदलाल
पिया ॥ कटि तट चटकीलो रंगीलो छबीलो चपलाहूतें चपल काम रही सी
बिलोवत हिया ॥१॥ जब उन मुसकाय चितयेरी मो तन निठुरन मुरझन झपकन
मन पलकन मनु पवन उलावे प्राण दिया ॥ नंददास प्रभु ता दिनतें मेरी गति हों
जानों के जाने मो जिया ॥२॥

★ राग ईमन ★ लालन कहां चले छिप छिप के धरत पग बैयां पकर मोसों कहोगे
बात ॥ ऐसी कौन त्रिय सोहागिन भागिन वाही के भुवन तुम रहोगे रात ॥१॥
ऐसी कोन मनमानी मेरी ओर देखो नाहीं काहे कों सांची जुठी आय मिलाय सोंहे
मेरी खात ॥ चतुर बिहारी पिया तुम बहुनायक सांचे बोल करवे को आवोगे
प्रात ॥२॥

★ राग अडानो ★ मैं जब देखेरी गोपाललाल मोहनी मूरति नंदलाल तन मन धन
नोछावर करन को ले गईरी ॥ सुन्दर स्याम उजागर नागर बाकी छबी चित चितरे ने

लिख लई ॥१॥ गर सोहे बन माल देख मोही ब्रज की बाल या छबीपें हो मगन
भई ॥ सूरदास प्रभु कौन मंत्र पढ डायोरी मुरली में गावत धुनि नई नई ॥२॥

★ राग बिहाग ★ बसो मेरे नैनन में दोऊ चंद ॥ गौर वरन वृषभान नंदिनी
स्याम वरन नंद नंद ॥१॥ कुंज निकुंज में बिहरत दोऊ अति सुख आनन्द
कंद ॥ रसिक प्रीतम पिया रस में माते परो प्रेम के फंद ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ ए सिर सोने के सुतन सोहत पाग पेचन उपर नग लगे ॥
रतनारे ढारे से लोचन मुत मेन जगे ॥१॥ मुखकी मंजुलताई कापें बरनि न
जाई चंचलता हसदूर भगे ॥ नंददास नंदरानी छबिनिरखत बार पिबत जल जिन
काहुकी दृष्टि लगे ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ तेरेरी बदन कमलपर नंदनंदन चली मुरली नादकरत गुंजार ॥
ललित त्रिभंगी तेरे रोमरोम रमरमे कर राखों उर हार ॥१॥ जा सुखकों सनकादिक
इच्छत सो तेरे बसभए मुरार ॥ कल्यानके प्रभु कमलापति मिलवेको किनहुंन पायो
पार ॥२॥

★ राग बिहाग ★ राधेजुको प्रान गोवरधनधारी ॥ तरुन तमाल ढिंग
कनकलतासी हरिजुके प्रान राधिका प्यारी ॥१॥ मरकत मणि नंदलाल लाडिलों
कंचन तन वृषभान दुलारी ॥ सूरदासप्रभु प्रीत निरंतर जोरी जुगलबने
बनवारी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ हिमकर सुखद सरस रितुआई अद्भुत शोभा बरनी न जाई ॥
प्यारीजुके फरगुल सोहे प्रीतम ओढे सरस रजाई ॥१॥ परेहें परदा ललित तिवारी
धरी अंगीठी सुखदाई ॥ बरत अंगार धुप अंबरलों सरस सुगंध रह्यो
तहांछाई ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ हिमऋतु सिसिरऋतु अति सुखदाई ॥ प्यारी जू के फरगुल
सोहे प्रीतम ओढे सरस कवाई ॥१॥ पर गये परदा ललित तिवारी धरी अंगीठी
अति सुखदाई ॥ जरत अंगार घूम अंबर लों सरस सुगंध रह्यो तहां छाई ॥२॥
जब-जब मधुर सीत तन व्यापत बैठत अंग सों अंग मिलाई ॥ श्री वल्लभ पद

रज प्रताप ते रसिक सदा बलि जाई ॥३॥

मान के पद

★ राग कान्हरो ★ आजबनी वृषभानकुंवरिदूती अंचलवारत तृणतोरत कहेंत भलेजु भलें भामा ॥ वदनजोति कंठपोति छोटी छोटी लरमोतिन की सादाशुंगारहार कुचविच अतिशोभितहें बोरसरीदामा ॥१॥ एकरसनां गुणअपार केसें वरणों विशदकी रति अंगअंग पियनमत अभिरामा ॥ गोविंदबल सखी कहें रचिपचि विरंचि कीनी स्यामरमणको माई तूहीहे श्यामा ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ मानिनी मान निहोरो ॥ हों पठई तोहि लेन सांवरे चलरी गर्व कर थोरो ॥१॥ कुंजमहल ठाढे मनमोहन चितवत चंदचकोरो ॥ हरी दासके स्वामी स्यामा कुंजविहारी चलोरी होतहें बोरो ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ चढबढ विडर गई अंगअंग मानवेली तेरे सयानी ॥ हृदय आलवाल मध्य प्रकटभईरी आली प्रीतिपालीनीके कर छिन छिन रूसबो भयोपानी ॥१॥ कोनकोन अंगनते निरवारोरी आली अलक तिलक नयनन बेनन भ्रोंहसों लपटानी ॥ नंददासप्रभु प्यारी दूती के वचनसुन छबीली राधे मंद मंद मुरमुसकानी ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ अरी तू काहे अनमनी बोलतनाहिं बुलायें ॥ अवलोंतो तू हसत खेलतही कहाभयो मोहिं आये ॥१॥ नयन नीचेंकियें चितवन रुखदियें तिरछिभुंह चढायें ॥ रसिक-प्रीतमपिय कबके ठाढे विनवत हे परपायें ॥२॥

★ राग कान्हरो ★ हरिहोते हारीहों लालतिहारी प्यारीके पायन परपर ॥ रही सिरधरचरणन बडीबारभई लीजिये मनाय रूठी मानत नाहि क्योहूं कर ॥१॥ जेसेंजेसें रातजात तेसेंतेसें सतरात मोसों नबतरात मानीहे में यांसूंहार ॥ सुनतही वचन रसिकप्रीतम दूतीके आप उठ चले देखत वदन जात इतहीं ढार ॥२॥

★ राग नाईकी ★ तू मोहि कित लाईरी यह गली ॥ जो जिय डरपतहीं सोईभई आगें ठाढे मोहन अब कैसें जैवो मेरी माई ॥१॥ रशन दशनधर करसुं करमीडत दूतीसों खीजत आनंद उर नसमाई ॥ गोविंदप्रभु की तेरी हिलमिल बातेंहो

सबजानत भलीकीनी भले नगसों भेटकराई ॥२॥

★ राग नाईकी ★ रुसनों नकर प्यारी रुसवो निवार ॥ कबकीहों ठाडी तोसो अरज करतहों रेनरही घडी चार ॥१॥ मेरो कह्यों तू मान सुहागिन अतिसुंदर सुकुमार ॥ गोविंदप्रभुसों हिलमिल भामिन तनमन जोबनवार ॥२॥

★ राग नाईकी ★ हो तोसों अब कहा कहों आलीरी कोनवेरकी बुलावतही मोहि ॥ नवलनागर नवलकुंज कवके निस जागतहैं प्रीतिकीतोवरही नकछू इतनी सकुच नाहिन तोहि ॥१॥ कहा आयुस होतहै मोकों तुमतो सुहागके भर आवेश वसोई ॥ मोहि कहा तेरोई प्राणप्रीतम सुखपावें सोईतो करोरीआली गोविंद प्रभु अपने कंठराखति पोहि ॥२॥

★ राग नाईकी ★ लालन मनायो नमानत लाडिली प्यारी तिहारी अतिशय कोषभरी ॥ तुहारीसों अनेक यत्न छलबल सबकिये मानतो अब घटतनाहिन त्योंत्यों अतिरीस होतहैं खरी ॥१॥ सामदाम भेददंड एकोनहीं चितचुभत तापरहो पायपरी दंततृणधरी ॥ नाहिन कछू और उपाव आनबन्यो यह दाव गोविंदप्रभु आपुन चलिये तुम देखतही वाको मानछूट जेहें तिहिंघरीं ॥२॥

★ राग अडानो ★ तुम पहिलें तो देखो आय मानिनीकी शोभा लाल पाछेंतो मनायलीजें प्यारेहो गोविंदा ॥ करपर धरकपोल रहीरी नयननमूद कमलविछाय मानों सोयो सूखचंदा ॥१॥ रिसभरी भ्रोंह तापर भ्रमर बेटे अरबरात इंदु तर आयो मकरंद अरविंदा ॥ नंददासप्रभु एसी काहेकुं रुसैये बल जाको मुखदेखेते मिटत दुःखचंदा ॥२॥

★ राग केदारो ★ आपन चलिये लालन कीजिये नलाज ॥ मोसी जोतुम कोटिक पठवो प्यारी नमानत आज ॥१॥ होंतो तिहारी आज्ञाकारी मोसों कहाकहेत महाराज ॥ नंददासप्रभु बडरे कहे गये आपकाज महाकाज ॥२॥

★ राग केदारो ★ मानगढ क्यों हूं नटूटत अबलाके बलको प्रताप ॥ आपन ढोवाचढ गिरिधरपिय अबलातू चिलाचांप मुक्तकटाक्ष घूंघटदरवाजो नहीं खूटत ॥१॥ विविध प्रणतहथ नालगोला बोलेंजू उछटपरत काम कोट नहीं फूटत ॥

गोविंदप्रभु सामदाम भेद दंड कर घेरापस्यो चहूं दिशसंचित रुख्याई जलक्योंहूं नहीं
खूटत ॥२॥

★ राग केदारो ★ तूं न मानन देत आलीरी मन तेरो मानवेको करत ॥ पिदकी
आरतदेख मेरेजिय दयाहोत तेरी दृष्टि देखदेख डरत ॥१॥ मोसो कहत कहा
मेरो नदोष कछू निपट हठीली धायक्योंन अंकभरत ॥ नंददासप्रभु दूतीकें वचनसुन
ऐसे अंगढस्यो जेसे आंचके लगेते राग ढरत ॥२॥

★ राग केदारो ★ उत्तर न देत मोहनी मौन धर बैठी पियवचन सुनत नेकहु न
मटकी ॥ तूं कब चलेंगी आली रजनी गईरी सब शशिवाहन धरनी धुकलटकी
॥१॥ घरेरी पाणिकपोलन में करेंकलोल भुव नखलिखत तेरे कहा जात
घटकी ॥ मुग्धवधु रीस काहेको करत हठ परम भामती तू नागरनटकी ॥२॥
ध्रुवसमान फिर आयेरी सप्तरिषि अबही वारहेंतमचोररटकी ॥ मानदासबल राधिका
कुंवरी चल नीकी शोभा लागे तेरे नीलांबर पटकी ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ लाडिली नमानेहो लाल आपहीं पाऊंधारो जैसे हठत्यजे प्यारी
सोई यतन विचारो ॥१॥ वातेंतो बनाय कही जेती मति मेरी ॥ एकहूं नमाने
हो लाल ऐसी त्रिया तेरी ॥२॥ आपनी चोंपके काजें सखीभेष कीनो ॥ भूषण
वसन साजें वीना करलीनो ॥३॥ उतते आवत देखी चक्रत निहारी ॥ कोन
गाम वसतहो रूपकी उजियारी ॥४॥ गामतोहें नंदगाम तहांकीहों प्यारी ॥
नामहै सांवलसखी तेरे हितकारी ॥५॥ करसों करजोरें स्यामा निकट बैठाई ॥
सप्तस्वरन साज मिल स्वल्प बजाई ॥६॥ रीझ मोतीहार चारु उरले पहरावें ॥
ऐसेहीं हमारो भटू सांवरो बजावें ॥७॥ जोईजोई इच्छा होय सोई माग लीजे ॥
ऐसी बाते सांवरेसो कबहुं मान नकीजे ॥८॥ मुखसो मुखजोरें स्यामा दरपन
दिखावें ॥ निरख छबीली छबिप्रतिबिंब लजावें ॥९॥ छल तोऊ घर आयो
हस पीठ दीनी ॥ नंददास बलप्यारी आंकों भरलीनी ॥१०॥

★ राग बिहागरो ★ काहेकूं तुम प्यारे सखी भेष कीनो ॥ भूषणवसनसाजें
वीनाकरलीनो ॥१॥ मोतिन मांग गुही तुम कैसेहों प्यारे ॥ हम नहिं जाने

पहचाने कोनके दुलारे ॥२॥ रूसवेको नेम नित्य प्यारी तुम लीनो ॥ ताहीके कारण हम सखी भेषकीनो ॥३॥ सबसखी दुरदुर देखी कुंजनकी गलियाँ ॥ नंददास प्रभुप्यारे मानलीनी रलियाँ ॥४॥

★ राग बिहागरो ★ मान न घट्योआली तेरो घटजु गई सबरेन ॥ बोलन लागे तमचर ठोर-ठोरतू अजहूं नबोलीरी पिकबेन ॥१॥ कमलकली विकसी तूं न नेक हसी कोन टेवपरी मृगशावक नयन ॥ नंददास प्रभुको नेह देख हांसी आवत वे बैठेहैं रचिरचि सेन ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ मनावत हार परीरी माई ॥ तू चटतें मटहोत नराधे हों हरि लेन पढाई ॥१॥ राजकुमार होयसो जाने के गुरुहोय पढाई ॥ नंदनंदनको छांड महातम अपनी राखबडाई ॥२॥ ठोडीहाथचलीदेदूती तिरछी भ्रोंह चढाई ॥ परमानंदप्रभु करोंगी दुलहैया तो बावा की जाई ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ तूं चल मेरो राख मान ॥ वे तो तिहारो मगजोवतहें तू तो निपट अयान ॥१॥ काहूकी कही सुन धरीये जियमें करीये अपने मनकों सयान ॥ ऊठ चल हिलमिल कहत गदाधर नेक न करेंरी तूं कोनकी कान ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ आवत जातहैं तो हार परीरी ॥ ज्यों ज्यों प्यारो विनतीकर पठवत त्योंत्यों तूं गढमान चढीरी ॥१॥ तिहारे बीच परेसोई बावरी हों चौगानकीगेंद भईरी ॥ गोविंदप्रभुकों वेगमिल भामिनी सुभग यामिनी जातवहीरी ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ कृष्ण चंद्र आवेंगे मेरे आजरी माई बहुतदिननकी अवधि आज ॥ तनमन जोबन आनंदित वदनहास नयन सेनवेनमधुरथार मध्यकरकें पहेलें मिलहोरी भेटसाज ॥१॥ गृहगृहते सखी बाल लेहुंरी अति प्रवीन वीनाकरधर हरिसंग करहों रतिसुख समाज ॥ मकरंद नंद सुतकिशोर रिझवोंगी गानतान आनआन आछेहूं कृष्ण रागरंग रिझायकें लेहोंरी एक छत्रराज ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ मोहनराय मानीरी तेरी बतियाँ ॥ मदनमोहन पिय बैठे एकांतद्वै दीनो सुहस्त जाय पतियाँ ॥१॥ जबलग धीरजधररी सयानी दिनगत

याम जोलों होय अधरतिया ॥ कुमनदासप्रभु दूती के वचनसुन परमसीतल भई छतियां ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ कहो कैसे कीजे हो ऐसे कपटिन को विश्वास ॥ एकनके चित्तलेत चोरकें एकन लेत उसास ॥१॥ जो कोऊ मान करत ताहि मनावत चेरीढे रहें तासों होत उदास ॥ रसिक-प्रीतमकी जानी नपरे हांसी कीधों उपहास ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ अतिहीं निटुरत्रियमानवती क्योंहूं क्योंहूं मनाई ॥ आपने जानमें बहुतभांत करनीकी युक्ति बनाई ॥१॥ जे तुमकही कपटकी बातें अनेक यत्न करकें दिखराई ॥ रसिकप्रीतम आप चलियें मिलवें रसवशकीजें मोहिदीजें रीझ बधाई ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ चलचल मेरो कह्योतूंमान नातर पछतेहे करमान ॥ अबहींतो पिय पायपरतहें त्यज अभिमान पावेंगी अधिक सनमान ॥१॥ बहुनायक सुखदायक सोंकरि काहूको निवह्योहे गुमान ॥ रसिक प्रीतमसो पियजो पैयेतो सहिये कोटिक अपमान ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ आजशुभलग्न तेरे मिलन कों गिरिधरनागर गुनिन गनायो ॥ प्रथमसमागमते कित डरपत बडेभाग्य संचित फलपायो ॥१॥ नवनिकुंज मंडप सखी सुमति-विधाता सुहस्त बनायो ॥ रसिकलाल तब संग प्रमुदित कृष्णदास मंगलयश गायो ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ मेरे बुलाए नाहिन बोलतरी काहेकों भुलावत ॥ हों पठई प्यारे तोहि बोलन उलटी नागरी आंख दिखावत ॥१॥ तेरे मन भावे नंदनंदन तू हरिके चितमन बुद्धिभावत को जाने कामिनी कौतुककी मोसिनकुं बात नबोरावत ॥२॥ धरतमुरलिका आपतें अधरकर तनमनभई मधुर कलगावत ॥ कृष्णदास स्वामीगिरिधरकी मोहनमूरति कुचवीच अरुझावत ॥३॥

★ राग बिहागरो ★ बोलत मदनगोपाल विनोदी चलरी नागरी छांडेगजू ॥ मेरे जानगिरिधरन मिलनकों फूलेफूले तेरे अंगजू ॥१॥ तब उर पर युगल

नारंगफलरंग छबीले स्यामरंगजू ॥ कृष्णदासप्रभू गिरिधर नवरंग भू चपलमन्मथ
मानभंगजू ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ आज आली अचरज सुन मेरें प्रीतम आए मनावन ॥ तूं
जोनहिन दुहुनसमझावत रूसगए मनभावन ॥१॥ जांकी चरणरज ब्रह्मादिक
सुरमुनि पशुपंछीगन पावन ॥ तबतें नबिसरत मोहि सखीरी रसिकराय
मुखलावन ॥२॥

★ राग बिहागरो ★ राधा हरि अतिथि तुम्हारे ॥ रतिपति अशनकाल गृहआए
उठ आदरदे कहें हमारे ॥१॥ आसनआधी सेज सरक दे सुख पगरस पखारे ॥
अरघादिक आनंदअमृतले ललितलोल लोचनजल ढारे ॥२॥ धूप सुवास स्वास
सौरभ मुखविहसनिरधरें दीपउज्यारे ॥ वचनरचन भ्रूभंग अवरअंग प्रेममधुररस
परोसन न्यारे ॥३॥ उचितकेलि कटुतिक्त करजद्विज अमलऊरोजफल कठिन
करारे ॥ मर्दनक्षार कषायकवचग्रह चुंबनादिसमर्पि संभारे ॥४॥
अधरसीधुउपदेशसिंचशुचि विधिपूरण मुखवास संवारे ॥ सूर सुकृत संतोष स्यामकों
बहुत पुण्य यह व्रतप्रतिपारे ॥५॥

★ राग बिहागरो ★ दोरीदोरी आवत मोहि मनावत दामखरच कछु मोललईरी॥
अचरापसार के मोहि खिजावतहों तेरे बाबा की चेरी भईरी ॥१॥ जारीजा सखी
भवनआपने लखबातनकी एक कहीरी ॥ नंददास वे क्यों नहीं आवत उनके
पायन कछु मेंहदी दईरी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ सुनत खिसयानी परी चल दूती प्रीतम पें गई हे लजाय ॥
वे तो नहि मानतकोटि जतन कीए हो पचिहारी बोहोत मनाय ॥१॥ आपुहि
मनाइ लीजे मोसों एसी कही सुनो अब कहा कीजे लाल दूसरो उपाय ॥ नंददास
प्रभु एसी सुनि आपहि पधारे तब पोढे अपनी प्यारी कों उर लाय ॥२॥

★ राग कल्याण ★ सिखवत केती राति गई । चंद्र उदै बर दीसनि लाग्यो तू
नहिं और भई ॥ सुनि हो मुगध ! कह्यो नहिं मानति जामी हृदई कई । 'परमानंद'
प्रभु कों नहिं मिलती तौ प्रतिकूल दई ॥

★ राग कान्हरो ★ मनावन आयेरी मनावन जान्यो हे प्राणेश्वर प्राणनके प्यारे ॥
कोन कोन गुन रूप बरनों प्यारे तिहारे उनतन नयना न्यारे ॥१॥ मेरी सी मोसों
ओरनकी ओरनसों एसे व रंग ढंग प्यारे तिहारे ॥ नंददास प्रभु एक रस क्यों न रहो
केसे के प्राण पत्यारे ॥२॥

पोढवे के पद

★ राग केदारो ★ आज में देखे आलीरी सो दोऊ मिल पोढे बातें करत ॥
वदननिहारत परस कपोलन हँसहँस आंको भरत ॥१॥ कबहुक रतिकी सुरत
भईरी जीयमनो एक लाज धरत ॥ रसिकप्रीतम पियप्यारी परस्पर एकरसद्वै
विहरत ॥२॥

★ राग केदारो ★ पोढेमाई ललन सेज सुखकारी ॥ मणिगण खचित रंगमहल
में संग श्रीराधाप्यारी ॥१॥ सहचरी गानकरत मधुरेस्वर श्रवणसुनत सुरत
हितकारी ॥ तनमन मगन भये पियप्यारी निरखदास बलहारी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ चांपत चरण मोहनलाल ॥ पलका पोढी कुवरिराधे सुंदरी
नवबाल ॥१॥ कबहुं करगहि नयनमिलवत कबहु छुवावत भाल ॥ नंददासप्रभु
छबिनिहारत प्रीतके प्रतिपाल ॥२॥

★ राग केदारो ★ पोढेमाई ललन सेज सुखकारी ॥ रत्नजटित सारोटा बैठी चांपत
चरण वृषभान दुलारी ॥१॥ चरणकमल कुच कलशनपर धरें अंग अंग पुलकित
व्रजनारी ॥ कर कर बिरी खवावत पियकों मधुरवचन बोलत मनुहारी ॥२॥
कंठ लगाय भुजदें सिरहानें अधर पान मुखकरत पियारी ॥ रीझउगार देत गोविंदप्रभु
सुरत तरंग रंगरह्यो भारी ॥३॥

★ राग केदारो ★ सुभग शय्यापेंपोढे कुंवर रसिकवर रसमसे अंगसंग जाय रेन
जागेहें ॥ शिथिल बसन बिचभूषण अलकछबि सोये मुखसुखसो लपट उरलागेहें
॥१॥ झुकझुक आवें नयन आलस झलक रह्यो लटपटी बात कहेत अति
अनुरागेहें ॥ सूरदास नंदसुवन तुहारो यश जानों प्राणपिया सुखहीमें रसपागे
हैं ॥२॥

★ राग केदारो ★ सखियन रुचिरुचि सेज बनाई ॥ रंगमहलमें परेहें परदा धरी अंगीठी सुखदाई ॥१॥ सीतसमें ग्रीष्म ऋतुकीनी अतिसुंदर वरराई ॥ श्रीविठ्ठलगिरिधारी कृपानिधि पोढे ओढ रजाई ॥२॥

★ राग केदारो ★ सोवत नींद आय गई स्यामहीं ॥ महरि उठ पोढाय दुहनको आपन लगी गृहकामही ॥१॥ वरजतहें घर के लोगनकों हरी ये लेले नामही ॥ गाढेबोल नपावत कोऊ डर मोहन बलराम ही ॥ शिवसनकादिक अंत नहिपावत ध्यावतहें हिनयामही ॥ सूरदासप्रभु ब्रह्मसनातन सो सोवत नंदधामहीं ॥३॥

★ राग केदारो ★ देखत नंदकान्ह अतिसोवत ॥ भूखेभये आप वन भीतर यह कहि कहि मुख जोवत ॥१॥ कह्यो नहीं मानत काहूको आप हठीले दोऊ वीर ॥ वारवार तन पोछत करसों अतिहि प्रेमकी पीर ॥२॥ सेज मंगाय लई तहां अपनी जहां स्यामबलराम ॥ सूरदासप्रभुके ढिंग सोईसंग पोढी नंदवाम ॥३॥

★ राग केदारो ★ जाग उठे तब कुंवर कन्हाई ॥ मैया कहांगई मो ढिंगते संगसोवत जान्यो बलभाई ॥१॥ जागे नंद यशोदा जागी बोललिये हरिपास ॥ सोवत झिझक उठे काहेते दीपक कियो प्रकाश ॥२॥ सपने कुदपूर्यो यमुना दहमें काहूदियो गिराय ॥ सूरस्यामसों कहत यशोदा जिनहो लाल डराय ॥३॥

★ राग नायकी ★ हेम ऋतु सिसिर ऋतु अति सुखदाई ॥ प्यारी जु के फरगुल सोहे प्रीतम ओढी हे सरस कवाई ॥१॥ रंगमहेल में परदा सोहाये धरी अंगीठी अति सुखदाई ॥ बरत अंगार अंबर अति महकत सरस सुगन्ध रह्यो तहां छाई ॥२॥ कबहुक मधुर सीत तन व्यापत बेठत अंगसों अंग मिलाई ॥ श्रीवल्लभपदरज प्रतापतें दास रसिक तहां बल जाई ॥३॥

★ राग नायकी ★ नीकी ऋतु लागत हैं अति सीत की ॥ अंस भुजा दे पोढे पिय प्यारी बात करत रसरीत की ॥१॥ बने गइ एक रजाई भीतर होत परस्पर जीतकी ॥ गदाधर प्रभु हेमन्त मनावत चाह बढी नव प्रीत की ॥२॥

★ राग नायकी ★ विलसत रंगमहल रंग लाल ॥ रंगरस की करत वतियां संग

पोढ़ी बाल ॥१॥ खचीत परदा परे चहुं दिस मुंदे झरोखा जाल ॥ जगमगात पावक अंगीठीं गान तान रसाल ॥२॥ नवल नारी नींहारी प्रीतम ढे रही उरमाल ॥ नंददास प्रभु युगल छबी उपर डारो सर्वस वार ॥३॥

★ राग नायकी ★ पोढ़े स्याम श्यामा संग ॥ रंगमहल की ललित तीबारी परदा परे सुरंग ॥१॥ जगमगात पावक अंगीठी भरे रतिरसरंग ॥ नंददास दम्पति सुरत सुख जीत्यो मनमथ अंग ॥२॥

★ राग नायकी ★ पोढ़े नवल लाल गिरिधारी ॥ रंगमहल में रचित सुख सज्या संग सोभित ब्रखभान दुलारी ॥१॥ लाल जरी दही को बागो बन्यो अंग लाल कुल्हे शोभित अति भारी ॥ सुघन चरण बनी अति गाढी झलमलात बीच बीच जरतारी ॥२॥ अतलस को लहेंगा प्यारी कटि कंचुकी झुमक सारी ॥ मधुरे सुर गावत केदारो मीठी तान लेत सुखकारी ॥३॥ परदा परे मनोहर द्वारे दीपक जोत सरस उजीयारी ॥ चतुर्भुजदास निरख दम्पति सुख तनमन धन कीनो बलिहारी ॥४॥

★ राग नायकी ★ पोढ़े प्यारी राधिका संग श्याम ॥ कनक मनिमय जगमगात अति रंगमहल निज धाम ॥१॥ परे परदा सरस सुन्दर सहचरी ढिंग भाम ॥ सुरत केलि विलास विलसत राधिका भुज बाम ॥२॥ किये रसबस प्राणपिय को लुंटी सब निश काम ॥ जान्यो न हित हरिवंस बीतत जात बासर बाम ॥३॥

★ राग नायकी ★ पोढ़े लाल सेज सुरंग ॥ अधरामृत पावत पिवावत प्राणपिया के संग ॥१॥ जगमगात आगे अंगीठी परदा परे पचरंग ॥ रंगमहेल में फीरत दोउ बढी प्रेम तरंग ॥२॥ ओढ रजाई (ओढ़े) दोउ पोढ़े लिपटाय अंगसो अंग ॥ सुरत रस विलसत जबही तब मनही उठत तरंग ॥३॥

★ राग नायकी ★ पोढ़े रहे क्रीडत रंगराई ॥ रंग महल की ललित तिबारी परदा परे सुखदाई ॥१॥ अरसपरस दोउ करत रंगरस पोढ़े ओढ रजाई ॥ जगमगात अंगीठी हुतासन सोभा सहज निकाई ॥२॥ रीझ उगार लेत हँसी प्यारी आनन्द उर न समाई ॥ जुग जुग राज करो पिय प्यारी सूरदास बल जाई ॥३॥

★ राग नायकी ★ पोढ़ी रही पिय संग प्यारी ॥ रंगमहल में धरी अंगीठी परदा परे सुखकारी ॥१॥ चित्र-विचित्र बनी चित्र सारी जगमगात अति भारी ॥ मुख तंबोल ले खात खवावत अंक भरे गिरिधारी ॥ अति विचित्र गुनरूप आगरी ललिता सखी प्रचारी ॥ सूरदास प्रभु को अद्भुत सुख तनमन धन बलिहारी ॥३॥

★ राग बिहाग ★ पोढ़े माई प्रीतम प्यारी संग ॥ रंगमहल की ललित तिवारी परदा परे हे सुरंग ॥१॥ जगमगात पावक अंगीठी धरि रति रसरंग ॥ नन्ददास प्रभु प्यारी जीति हे मुदित अनंग ॥२॥

★ राग नायकी ★ पोढ़े रंगमहल नन्दलाल ॥ दोऊ ओर धरी हे अंगीठी परदा परे रंग लाल ॥१॥ ललितादिक सखी चरन चांपत निरखत होत बेहाल ॥ रसिक स्वामिनी लाय लई उर भरि लीनी अंक वारि ॥२॥

★ राग बिहाग ★ रतन जटित पलका पर पोढ़े केलि करत दोऊ मिलत परस्पर ॥ पर गये परदा ललित महल में जगमग होत अंगीठी ढींग धरि ॥१॥ रति रसकेल विलास हरिरस अधरामृत पीवत हे दृग भरि ॥ मदनमोहन गिरधर क्रीडा विनोद मुदित परस्पर भवर चहेल करि ॥२॥

★ राग बिहाग ★ पोढ़े माई रंगमहल गिरधारी ॥ सुंदर गादी तकीया सेज रची धरी अंगीठी सुखकारी ॥१॥ कंठ लगाये भुज दे सिरहाने अधरामृत पीवत सुकुमारी ॥ वीन मधुरे सुर बजावत ललिता कृष्णदास बलिहारी ॥२॥

★ राग बिहाग ★ अरी इन सोर संवार ओढ़ाई ॥ सीरतें खसि पायन तर आई सीत सतावन आई ॥१॥ अतिसे श्रमित जानि प्यारीने दीनी सोर संवारि ॥ परमानन्द प्रभु पर तनमन जोबन वार ॥२॥

★ राग बिहाग ★ ए दोऊ सुरत सेज सुख सोये ॥ करत पान मकरंद प्रिया प्रिय अधर पानरस जोये ॥१॥ तनसों तनमन सों मन मिलवत नैन पानरस भोहे ॥ कृष्णदास प्रभु सुखनिधि विलसत मदन मान सब खोए ॥२॥

★ राग बिहाग ★ पोढ़े श्याम राधे संग ॥ सुरंग पलंग सुरंग बिछोना कसना कसे सुरंग ॥१॥ सुरंग सरस रजाई नीकी ओढ़ी हे दोउ अंग ॥ रहे हे लपटाय

दोऊ मिल रसिक निरखत ढंग ॥२॥ पोढे पिय दोउ सेज हरे ॥ प्रमुदित
बान रस बरखत आनन्द नेन भरे ॥३॥ कनकबेली वृखभान नन्दिनी श्याम
तमाल तरे ॥ रतिपति केलि करत रसिक पिय दसनन दिव्य झरे ॥४॥

★ राग बिहाग ★ गोद लिये बल मोहन दोउ ओढ रजाई बेठी नन्दरानी ॥
परदा डारे द्वार द्वारन प्रति रोहिनी धरी अंगीठी आनि ॥१॥ मुख देखन गृह-गृह
तें आई ब्रज ललना गावत मृदु वाणी ॥ द्वारकेस हरि हलधर मैया भैया बदन रहे
लपटाई ॥२॥

★ राग केदारो ★ पोढे रंगमहल ब्रजनाथ ॥ रंग रसकी करत बतियां राधिका
ले साथ ॥१॥ दोउ ओढ रजाई क्रीडत ग्रीवा भुजभर बाथ ॥ परमानंदप्रभु
कामआतुर मदन कियो सनाथ ॥२॥

★ राग बिहाग ★ पोढे हरि राधिका के संग ॥ रंगमहलमें ललित तिबारी परदा
परे सुरंग ॥१॥ झलमलात पावक अंगीठी रतन जटित बहोत रंग ॥ कुंभनदास
प्रभु गोवर्धनधर मोहत कोटि अनंग ॥२॥

★ राग बिहाग ★ पोढे रंगरमनीराय ॥ रंगमहेल चित्र किये सुंदर जगमगात
जुराय ॥१॥ रत्नजटित की आगे अंगीठी परदा परे सुहाय ॥ बल जाऊं
छबिली छबिपर कृष्णदास बलि जाय ॥२॥

★ राग बिहाग ★ पोढे हरि रंगमहल पिय प्यारी । सुंदर रची हे सेज ता ऊपर
तकिया धरे हे सवारी ॥१॥ जगमग होत अंगीठी पावक गोखन धरे हे दीप
सुधारी । मधुर सुर गावत कोकिल कल कृष्णदास बलिहारी ॥२॥

★ राग अडानो ★ मेरे लाडिलेहो लाल अजहून नींदकरो पलनाँ न सोहायतो
गोदले सुवाऊं ॥१॥ आर छांडो गीत गाऊं हालरो हुलराउ ग्वालनके मुखकी
कहानी सुनाउं ॥१॥ कोनधों भवन आये काहूकी नजर लगी भोर ऋषिराज
रक्षा बंधाउं ॥ मेरे ब्रजइश्वर तुम एसी बुझो न रीस भोरहो कुंवर कान्ह झगुली
सिवाउं ॥२॥